एक ओंकार सतिगुरू प्रसादि
धुर दे पैगाम
आत्मा दे नाउ !
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
हक
हक
तवं तवं
नमौं नमं
मेरे साहिब जी
शुद्ध रूहानी सतसंग
सुण-सुण नाम तुमारा प्रीतम - प्रभ पेखन का चाउ । दइआ करहु किरम अपुने कउ - इहै मनोरथ सुआउ । मन मह - राम नामा जाप । कर किरपा वसहु मेरै हिरदै - होइ सहाई आप ।
Www.9009.co.in

"प्रीतम"

1. सुण-सुण नाम तुमारा प्रीतम - प्रभ पेखन का चाउ । दइआ करहु किरम अपुने कउ - इहै मनोरथ सुआउ ।

अर्थः- हे मेरे प्यारे ! तुम मेरे मालिक हो, अपने इस तुच्छ सेवक पर कृपा करो, ताकि तुम्हारा नाम सुन-सुनकर मेरे भीतर तुम्हारे दर्शन का चाव बना रहे । मेरा यह मनोरथ, मेरी यह ज़रूरत पूर्ण कर ।

उदम करउ करावहु ठाकुर - पेखत साधू संग । हरि-हरि नाम चरावहु रंगन - आपे ही प्रभ रंग ।

अर्थः- हे मेरे मालिक ! (मुझसे यह उद्म) कराता रह, गुरु-संगति में तेरा दर्शन करता हुआ मैं तेरे नाम जपने का कामकाज करता रहूँ । हे प्रभु ! मेरे मन पर अपने नाम का रंग चढ़ाओ, तुम आप ही (मेरे मन को प्रेम-रंग में) रँग दो ।

मन महु - राम नामा जाप । कर किरपा वसहु मेरै हिरदै - होइ सहाई आप ।

अर्थः- हे प्रभु ! (मुझ पर) कृपा कर, मेरे हृदय में विराजमान हो । यदि तुम मेरे सहायक बनो, तो मैं अपने मन में तुम्हारा राम-नाम जपता रहूं ।

तन-धन तेरा तूं प्रभ मेरा - हमरै वस किछ नाह । जिउ-जिउ राखह तिउ तिउ रहणा - तेरा दीआ खाह ।

अर्थः- हे प्रभु ! मेरा यह शरीर, धन सर्वस्व तेरा ही दिया हुआ है, तुम ही मेरे स्वामी हो, हमारे वश कुछ नहीं है । तुम हम जीवों को जिस रूप में रखते हो, वैसे ही हम जीवन बिताते हैं, हम तुम्हारा दिया हुआ ही हरेक पदार्थ खाते हैं ।

जनम-जनम के किलविख काटै - मजन हरि जन धूर । भाइ भगत भरम भउ नासै - हरि नानक सदा हजूर । (405-406)

अर्थः- हे नानक ! (कह-) परमात्मा के सेवकों के (चरणों की) धूलि में किया स्नान मनुष्य के जन्म-जन्मान्तरों के पाप दूर कर देता है, प्रभु-प्रेम के द्वारा, भक्ति के प्रभाव से मनुष्य का हरेक प्रकार का भय दूर हो जाता है और परमात्मा सदा साथ-साथ प्रतीत होने लगता है ।

a. हउ पंथ दसाई नित खड़ी – कोई प्रभ दसे तिन जाउ । जिनी मेरा पिआरा रविआ – तिन पीछे लाग फिराउ । कर मिंनत कर जोदड़ी – मै प्रभ मिलणे का चाउ । (41)

अर्थः- मैं नित्य खड़ी-खड़ी लोगों से रास्ता पूछती हूँ, कोई मुझे प्रभु-निकटता पाने की राह बता दे, तो मैं वहाँ जा सकूं । जिन्होंने मेरे प्रियतम से मिलाप प्राप्त कर लिया है (अर्थात जो परमात्मा का भेद जानते हैं), मैं उन्हीं के पीछे-पीछे फिरती हूँ (उन्हीं का अनुकरण करती हूँ) । उनकी मन्नत करती, उनकी कठोर सेवा करती हूँ, क्योंकि मुझे प्रभु-मिलन का चाव है (और वे मुक्त जीव कृपा-पूर्वक मुझे परमात्मा के साथ मिला सकते हैं) ।

b. खोजत खोजत मै फिरा – खोजउ बन थान । अछल अछेद अभेद – प्रभ ऐसे भगवान । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 816)

अर्थः- मैं वन, नगर आदि खोज-खोजकर उस निष्कपट, अनश्वर और अभेद्य परमात्मा को खोजता रहा हूँ ।

c. हउ फिरउ दिवानी आवल बावल – तिस कारण हरि ढोलीऐ । कोई मेले मेरा प्रीतम पिआरा – हम तिस की गुल गोलीऐ ।

अर्थः- हे भाई ! मैं उस हरि-प्रभु से मिलने के लिए दीवानी हुई फिरती हूँ । यदि कोई मुझे मेरा प्रियतम प्यारा मिला दे, तो मैं उसकी दासियों की दासी (बनने को तैयार हूँ) ।

सतिगुर पुरख मनावहु अपुना – हरि अम्रित पी झोलीऐ । गुर प्रसाद जन नानक पाइआ – हरि लाधा देह टोलीऐ । (527)

अर्थः- हे जीव-स्त्री ! तू अपने गुरु सतिपुरुष को प्रसन्न कर ले और आत्मिक जीवन का दाता हरि-नाम रूपी जल प्रेम-पूर्वक पीती रह (यही तरीका है हरि-प्रभु को मिलने का)। हे दास नानक ! गुरु की कृपा से ही परमात्मा मिलता है, और, हृदय में खोज करने से ही उसे पाया जा सकता है ।

d. सुण यार हमारे सजण – इक करउ बेनंतीआ । तिस मोहन लाल पिआरे – हउ फिरउ खोजंतीआ । (703)

अर्थः- हे सत्संगी मित्र ! हे सज्जन ! मेरी एक प्रार्थना है । मैं उस मनमोहन प्यारे प्रभु को खोजती फिरती हूँ ।

e. मेरो सुंदर कहहु मिले कित गली । हरि के संत बतावहु मारग – हम पीछे लाग चली । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 527)

अर्थः- हे प्रभु के सन्तजनो ! मुझे कहो, मेरा मनमोहन प्रियतम किस गली में मिलेगा ? मुझे वह रास्ता बताइए (ताकि) मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे चली चलूँ ।

f. तिना देख मन चाउ उठंदा – हउ कद पाई गुणतासा । जिनी मेडा लाल रीझाइआ – हउ तिस आगै मन डेंहीआ । नानक कहै सुण बिनउ सुहागण – मू दस डिखा पिर केहीआ । (703)

अर्थः- भु से अनेक प्रेम करनेवाले हैं, एक दूसरे से अधिक सुन्दर जीवन वाले हैं, वे हमेशा आत्मिक मिलन का आनन्द अनुभव करते हैं। इन्हें देखकर मेरे मन में भी चाव पैदा होता है कि मैं भी कभी उस गुणों के भण्डार प्रभु को पा लूँ। जिस गुरु ने मेरे प्यारे हरि को प्रसन्न कर लिया है, मैं उसके समक्ष अपना मन अर्पित करने को तत्पर हूँ। नानक का कथन है कि हे सौभाग्यवती ! मेरी प्रार्थना सुनो। मुझे बताओ, मैं देखूँ कि प्रभु-पति कैसा है।

ੴ. तिस दस पिआरे सिर धरी उतारे - इक भोरी दरसन दीजै। नैन हमारे प्रिअ रंग रंगारे - इक तिल भी ना धीरीजै। प्रभ सिउ मन लीना जिउ जल मीना - चात्रिक जिवै तिसंतीआ। जन नानक गुर पूरा पाइआ - सगली तिखा बुझंतीआ। (703)

अर्थः- हे प्रभु ! पल भर के लिए ही मुझे दर्शन दो। मेरी आँखें प्यारे के प्रेम-रंग में रँगी हैं (उसके बिना) पल मात्र के लिए भी चैन नहीं मिलता। मेरा मन प्रभु में इस प्रकार लीन है, जसे पानी की मछली (पानी में मस्त रहती है और) पपीहे को स्वाति की बूँदों की प्यास लगी रहती है। दास नानक का कथन है कि जिसे पूर्णगुरु मिल जाता है, उसकी सारी प्यास बुझ जाती है (तृष्णा दूर हो जाती है)।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"

धुर दे पैगाम
एक ओंकार सतिगुरू प्रसादि
आत्मा दे नाउ !
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
तपः तपौ
नमौ नमः
हक
मेरे साहिब जी
रूहानी
सतसंग
सुण-सुण नाम तुमारा प्रीतम - प्रभ पेखन का चाउ । दइआ
करहु किरम अपुने कउ - इहे मनोरथ सुआउ । मन मह -
राम नामा जाप । कर किरपा वसहु मेरै हिरदै - होइ सहाई आप ।
Www.9009.co.in